॥ ओ३म् ॥

वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र

आर्य नीति

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

पाक्षिक

वर्ष : 19 अंक : 4   25 फरवरी 2019   मूल्य एक प्रति : 3 रुपये   डाक पंजियन संख्या : Jaipur City/264/2018-20   वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

नवजीवन, नवोत्साह एवं साहसी देशभक्त वीरों के अमर बलिदानों का प्रतीक

ऋतुराज बसन्त

-: सत्यबाला देवी :-

नवजीवन के प्रतीक प्रकृति नटी के अनुपम सौन्दर्य एवं मातृभूमि के गौरव, सम्मान एवं स्वतंत्रता की रक्षा हेतु दीवाने और साहसी वीरों के अमर बलिदानों के महापर्व ऋतुराज बसन्त के शुभागमन से समस्त चराचर सृष्टि में हर्ष उल्लास, उमंग एवं उत्साह का सागर हिलोरें लेने लगता है। समस्त प्राकृतिक वातावरण में शोभा और सौन्दर्य बिखर जाता है। प्रकृति सुन्दरी नव पल्लवों का हरित परिधान धारण किए, नाना रंग बिरंगे कुसुमों के विविध आभूषणों से अलंकृत सरसों के पीत वर्ण पुष्पों की बासन्ती साड़ी से आवेष्टित, सोलह श्रृंगार किए सजी संवरी नई नवेली दुल्हन सी अपने प्रियतम बसन्त का अभिनन्दन करने हेतु उद्यत हो उठती है। यही नहीं कल-कल निनादिनी पुण्य सलिला सरिताएँ भी ऋतुराज बसन्त का अभिषेक करने हेतु उत्सुक हो उठती है। पुष्प गुच्छों पर गुञ्जार करते हुए मधुपान द्वारा तृप्त मस्त भ्रमरगण, कलरव करते विविध विहंग समूह, आम्रकुंजों में पंचम स्वर अलपाती उन्मत्त कोकिला आदि मानों बन्दी गणों के रूप में ऋतुराज की अभ्यर्थना करते हुए, उसका प्रशस्ति गान कर एक निराले ही रहस्यमय लोक का सृजन कर, अखिल सृष्टि को मधुरिम प्रेम का संदेश बहन करते हुए समस्त वातावरण को प्रेममय प्रेरणादायक, स्फूर्तिमय, उत्साहवर्धक, स्निग्ध, मधुर, सरस एवं मनोहर बना देते हैं। जिसपादप समूह को आततायी पतझड़, पत्र पुष्प विहीन कर ठूंठ सदृश, जीर्ण-शीर्ण एवं जर्जर बना देता है, बसन्त का आविर्भाव उन्हें पुनः नव-किसलय दल से सुसज्जित कर, अनुपम सौन्दर्य वैभव से अलंकृत कर नवजीवन प्रदान कर देता है। भयंकर शीत से चराचर सृष्टि को उत्पीड़ित एवं त्रस्त करने वाले शिशिर की विदा और नवोल्लास के प्रतीक ऋतुराज बसन्त के अवतरण से समस्त जड़ चेतन उसी प्रकार उल्लासित एवं आनन्द मग्न हो उठते हैं, जिस प्रकार किसी अत्याचारी शासक के पराभव से समस्त प्रजाजन सुख-शांति और निश्चिन्तता का अनुभव कर आनन्द विभोर हो उठते हैं। बसन्त के आविर्भाव से समस्त वातावरण नव आभा, नव ज्योति, नव-छटा, नव-सौन्दर्य एवं नव-आलोक से ज्योतिर्मान हो उठता है। मन्द-मन्द प्रवाहित, शीतल सुगन्धित दक्षिणी मलय समीर नव-विकसित पुष्प-दलों से अठखेलियाँ करने लगती है जिसके फलस्वरूप समस्त मानव-समाज नाच-रंग, गायन-वादन आदि नाना आमोद-प्रमोदों एवं विविध मनोरंजक क्रीड़ाओं में मग्न हो आत्म विस्मृत हो उठता है। अखिल विश्व में ऋतुराज बसन्त का अखण्ड साम्राज्य प्रतिष्ठित होने के फलस्वरूप मानव जीवन में नही अपितु पशु-पक्षियों तक के हृदयों में भी नवोत्साह, नव-अभिलाषा, नवआशा, नवचेतना, नव जागरण एवं नव स्फूर्ति का संचार होने लगता है। समस्त सृष्टि में विरला ही कोई हत भाग्य होगा जिसे कामन मयूर बसन्त की मनोमुग्धकारी, ज्योत्सनामय, अपूर्व, अनिबर्चनीय नयनाभिराम उज्ज्वल दैवीय बासन्तिक छटा को निरखकर नाच न उठता हो।

ऋतुराज बसन्त के आविर्भाव पर संवेदनशील रसिक कवि हृदय का तो कहना ही क्या वह तो ऋतुराज के इस अद्वितीय दिव्य सौन्दर्य पर मुग्ध हो उसकी सार्वभौमि विजय का गुणगान करने लगता है। विश्व के अनेक कविजनों ने ऋतुराज की अनुपम शोभा और अपूर्व छटा का चित्रण कर अपनी लेखनी को चित्रकारों ने अपनी तूलिका को धन्य किया है। कविकुल चूड़ामणि महाकवि कालिदान से कुमारसम्भव में बसन्त का इतना सरस, सजीव और हृदयग्रही चित्रण किया है कि रसिक पाठक गण उसे पढ़ते-पढ़ते आत्मविभोर और मंत्रमुग्ध हो उठते हैं। कवि कुल शिरोमणि जयदेव, मैथिल कोकिल विद्यापति, महाकवि केशव प्रभृति कवि जनों के काव्य में तो बसन्त इठलाता सा दृष्टिगोचर होता है। जायसी की विरस दग्धा नायिका नागमति तो बसन्त के अलौकिक, दिव्य बासन्तिक सौन्दर्य की अनुपम छटा का अवलोकन कर अपनी विरह व्यथा ही नहीं प्रत्युत अपने प्राण स्वरूप प्रियतम को भी विस्मृत कर मस्ती में झूमने लगती है। भारतीय काव्य गगन के चन्द्र महाकवि तुलसी दास ने भी रामचरित मानस में बसन्त की बासन्तिक शोभा का चित्रांकन कर नव चेतना एवं नव-संकल्प का शुभसंदेश दिया है। रीति कालीन कवियों को तो पग-पग और डगर-डगर में बसन्त ही बिखरा दृष्टिगोचर होता है।

योगराज भगवान श्रीकृष्ण ने भी कुरुक्षेत्र के युद्ध प्रांगण में मोह ग्रस्त अर्जुन को अन्याय और अत्याचार का दमन करने और आततायी कौरवों के विरुद्ध लोहा लेने के लिए नव साहस का संदेश देते हुए उसमें दुष्ट दलन, पौरुष, वीरता और लोक कल्याण की भावना जागृत करने हेतु कहा था। ''ऋतुनाम कुसुमाकरा:।'' छायावी युग की प्रतिनिधि कवयित्री महादेवी वर्मा भी, अनुपम यौवनमयी, सौन्दर्यमयी प्रकृति प्रदत्त आभूषणों एवं आभरणों से समअलंकृत बसन्त रजनी का आह्वान करती हुई कहती हैं, 'धीरे-धीरे उतर क्षितिज से ऐ! बसन्त रजनी! तारकमय नववेणी बन्धन,' इत्यादि। वस्तुतः बसन्त रजनी के चेतन, व्यापक मनोमुग्धकारी व्यक्तित्व का दर्शन कराता है। अनन्त शक्तिशाली, नवचेतना जागृत करने वाले ऋतुराज बसन्त

के विश्वव्यापी प्रभाव से तपोवन भी अछूते नहीं रहते। जिसके फलस्वरूप तपावनों की शांत उन्मुक्त, स्निग्ध, ज्योत्सनामयी सुरम्य प्राकृतिक बासन्तिक छटा तपोधनी महर्षियों के हृदयों में भी अनन्तता के भाव जागृत करने में समर्थ होती रही है। फलत: वे आत्म-साधन के साथ-साथ आध्यात्मिक चिन्तन में दत्तचित्त हों उस अनन्त सौंदर्यशाली परम शक्ति समन्वित, निराकार निर्विकार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी प्रभु का साक्षात्कार करने में भी सफल होते रहे हैं।

यही नहीं ऋतुराज बसन्त मातृभूमि के लाडले साहसी वीर देशभक्त नौजवानों को भी देश की स्वाधीनता और गौरव की रक्षा हेतु देश प्रेम की बलिवेदी पर हँसते-हँसते प्राणोत्सर्ग करने की भी प्रेरणा देता रहा है। जहाँ एक और यह महापर्व सहृदय, रसोन्मत्र मानव-हृदयों में रणोल्लास एवं आत्मोत्सर्ग की भावना का उदय कर उन्हें आततायी, देशद्रोही एवं पावन स्वर्गतुल्य सुखद मातृभूमि को पदाक्रांत करने की इच्छुक शत्रु की विशाल वाहिनी से जूझने की शक्ति और साहस भी प्रदान करता रहा है। इसी भावना के वशीभूत हो हमारे शूरवीर और निर्भय राजपूत सैनिक केसरिया बाना पहन, वीररस में उन्मत्त हो, प्राणों का मोह त्याग, रणघोष सुनते ही शत्रु सेना पर लूट पड़ते और उससे लोहा लेते हुए या तो समस्त शत्रु-शत्रु सेना का विध्वंस कर विजयोल्लास में मत्त हो बसन्तोत्सव मनाया करते थे अथवा स्वयं जौहर व्रत धारण का मातृभूमि की स्वतंत्रता और सन्मान की रक्षा हेतु एक-एक करके वीरगति को प्राप्त हो जाते थे पर कभी भी शत्रु को पीठ दिखाकर कायरों की तरह रणभूमि से पलायन नहीं करते थे। पुरजा-पुरजा कट मरे तऊ न छाड़े खेत। दूसरी ओर वीरांगना राजपूत ललनाएँ भी अपनी आत्मरक्षा हेतु पूजा की थाली लिए अपने साहसी वीरों का अनुगमन करते हुए जौहर व्रत का अनुष्ठान करने हेतु प्रज्ज्वलित चिता में कूद पड़ती थी। अत: वीर हृदयों में इसप्रकार अदमनीय देश की स्वाधीनता की रक्षा हेतु साहस, अपूर्व वीरता, अद्भुत शौर्य, महान आत्म त्याग एवं अभूतपूर्व आत्म बलिदान की भावना का उदय करने वाला ऋतुराज बसन्त वस्तुत: सत्यार्थों में ऋतुराज कहलाने का अधिकारी है। इसी भावना को लक्ष्य कर श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी ओजस्विनी कविता 'वीरों का कैसा हो बसन्त' में भारतीय वीरों द्वारा सत्यार्थों में बसन्त मनाने का चित्रांकन किया है। जिसका साक्षी आज भी भारत का प्रहरी स्वरूप हिमाचल, पानीपत, कुरुक्षेत्र, हल्दीघाटी तथा राजस्थान के अब रण-प्रांगण एवं 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में झांसी की रानी सम वीरांगनाओं और मंगल पाण्डे समान देशभक्तों समान देश प्रेम की बलिवेदी पर प्राण न्यौछावर करने वाले वीरों की गाथाएँ सुना रही हैं।

भारत माँ के वक्षस्थल स्वरूप पंचनद (पंजाब) के वीरों साहसी सपूतों ने अपनी मातृभूमि से सदैव यही वरादान एवं शुभाशीष मांगी है, 'मेरा रंग दे बसन्ती चोला माए री मेरा रंग दे बसन्ती चोला' और ऐसा ही अलौकिक बसन्ती चोला धारण कर शहीद भगतसिंह और उनके साथी वीरोंने पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी मातृभूमि को स्वतंत्र कराने हेतु हंसते-हंसते फांसी के फंदों को चूक कर गले लगा लिया था।

ऋतुराज बसन्त के उस पावन महापर्व को एक अन्य अभूतपूर्व बलिदान ने और भी चार चांद लगा दिए हैं। इसी पवित्र पर्व के दिन धर्मवीर, दृढ़व्रती चतुदर्श वर्षीय वीर बालक हकीकत राय ने वैदिक धर्म की रक्षा हेतु तुच्छ प्राणों का मोह त्याग, अपने अमर बलिदान तत्कालीन आततायी नृशंस मलेच्छ शासक का गर्व चूर्ण किया था। कहना न होगा कि ऋतुराज बसन्त द्वारा ही उस वीर बाल हृदय में भी धर्म की बलिवेदी पर प्राणोत्सर्ग करने की प्रेरणा प्रदान की गई थी। पर यह कहना भी अत्युक्ति न होगी कि वीर बालक हकीकत के इस अमर बलिदान ने ऋतुराज बसंत को महत्वपूर्ण, गौरवशाली और प्रभावशाली बना दिया था।

बसन्त के महान् पर्व के दिन वीर बालक हकीकत ने अपने जिस अद्भुत आत्म त्याग, अपूर्व निर्भयता, अदम्य साहस, दृढ़ संकल्प एवं अद्वितीय धार्मिक आस्था, विश्वास और श्रद्धा का परिचय दिया उन्हीं अमिट पद चिन्हों का अनुसरण करते हुए धर्म प्रधान भारत की भावी पीढ़ियाँ चिरंतन काल तक देश और धर्म की बलिवेदी पर हँसते-हँसते आत्म बलिदान करने के लिए सतत् तत्पर रहेंगी। हकीकत का बलिदान किसी व्यक्ति विशेष का बलिदान नहीं वह तो स्वधर्म, स्वजाति एवं स्वदेश हित प्राणोत्सर्ग करने वाले साहसी, निर्भय शूरवीरों के आत्म बलिदान का प्रतीक है। अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न और शोषण के सन्मुख शीश न झुकाने वाले महान् त्यागी हृदयों का आदर्श है। वीर हकीकत पंचनद की उसी वीर प्रसू पावन भूमि पर अवतरित हुआ जिसके साहसी वीर सपूतों को मातृभूमि की स्वतंत्रता का अपहरण कर उसे पराधीनता की अवमेघ लौह श्रृंखलाओं में आबद्ध करने वाले, उसे पदाक्रांत एवं पददलित करने की कुत्सित इच्छा से पूर्ण विदेशी दस्युओं से सदैव लोहा लेने एवं आत्मोत्सर्ग करने का गौरव प्राप्त होता रहा है। इसीलिए यह वीर भूमि शाश्वत काल से उसी प्रकार अपने दिव्य पुत्रों के अमर बलिदान अर्पित कर बसन्त के शुभागमन का स्वागत उनके रक्त से करती रही है। ऐसे में निर्भय, साहसी देशभक्त वीरों ने अनेक बार देश और धर्म की नैराश्य पूर्ण, साहसविहीन, दु:ख दैन्य ग्रस्त, अभाव, पीड़ित परिस्थितियों में पुन: बसन्त का अवतरण कर उसे सुख सौभाग्य, समृद्धि रूपी पत्र पुष्प समन्वित और बल वैभव से सम्पन्न करने का दृढ़ संकल्प पूर्ण किया है। यद्यपि इस दृढ़ व्रत के पालनार्थ उन्हें नाना यातनाएँ भी सहन करनी पड़ी, आजन्म आपद्विपदाओं की विशाल वाहिनी से जूझना पड़ा। यहीं नहीं प्रत्युत अपने प्राण तक भी विसर्जित करने पड़े पर फिर भी उन्होंने साहस नहीं छोड़ा।

बसन्त का यह पावन शुभ पर्व प्रतिवर्ष हमें उन्हीं भारत माँ के सच्चे वीर सपूतों का स्मरण कराता है। आओ! आज हम सब उन अमर शहीदों का अभिनन्दन करते हुए उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करें। केवल बसंती वस्त्र धारण कर आमोद-प्रमोद में रत हों, मनोरंजन और हास-विलास के साधनों में संलग्न होकर ही हमारा बसन्तोत्सव मनाना सार्थक नहीं हो सकता प्रत्युत ऋतुराज के आविर्भाव द्वारा नव-जागरण नवोत्साह, नव-चेतना, नव-प्रेरणा एवं नवजीवन का संदेश ग्रहणकर हमें राष्ट्र के जीवन में सत्यार्थों में बसन्त लाने का प्रयत्न करना होगा ताकि भारतीय जन-जीवन पूर्णतया सुखी, सम्पन्न, समृद्ध, उन्नतिशील, विकासशील और प्रगतिशील बन सक।

यद्यपि हमारे देश को पराधीनता की श्रृंखलाओं से मुक्त हुए साठ से भी अधिका वर्ष हो चुके हैं पर अभी तक इस अभागे देश के जनजीवन में बसंत का अवतरण नहीं हो सका। आज भी इस देश की पीड़ित, शोषित, अभावग्रस्त जनता निर्धनता एवं भ्रष्टाचार के जुए के नीचे दबी कराह रही है। आज भी देश में चतुर्दिक बेकारी, महंगाई, रिश्वतखोरी, लूटपाट, हिंसा, प्राणहन, अन्या, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न एवं असंतोष का अखण्ड साम्राज्य व्याप्त है। आज भी अलगाववादी, उग्रवादी तथा आतंकवादी प्रवृत्तियों द्वारा चारों ओर निरीह, निरपराध, निर्दोष व्यक्तियों की हत्याएँ एवं राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति को ध्वस्त किए जाते देख समस्त देशवासी आतंकित और त्रस्त हो रहे हैं। समस्त जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया है। जहाँ एक ओर कतिपय प्रांतों में असुरक्षा, अव्यवस्था एवं आतंक से हाहाकार मचा हुआ है। वहाँ दूसरी ओर अधिकार प्राप्ति पद लोलुपता, कुर्सी की खींचतान, शासन हथियाने, साम्प्रदायिकता, धर्मान्धता, कट्टरता, क्रूरता और बर्बरता के ताण्डव नृत्य ने समस्त वातावरण को विषाक्त, बना दिया है। वहाँ दूसरी और बाह्य आक्रामक शक्तियों को इस देश की अखण्डता, एकता, संगठन, समृद्धि और सुख शांति को मुँह बाए निगलने के लिए तत्पर होते देखकर प्रत्येक भारतवासी का हृदय अत्यधिक आत्मग्लानि, पीड़ा और व्यथा से भर उठा है।

अत: हार्दिक दु:ख से कहना पड़ता है कि समस्त विश्व को मैत्री, बन्धुत्व, प्रेम, मानवता एवं आध्यात्मिकता का अमर संदेश वहन करने वाला, धन-धान्य-समन्वित, पूर्व का यह प्रतिनिधि देश आज स्वयं ही बल वैभवहीन, मानसिक दासता में आबद्ध घोर निराशा एवं पतन के गर्त में डूब रहा है। आंतरिक और बाह्य संघर्षों ने इसकी जड़ों को खोखला कर दिया है। एक ओर विदेशी शत्रु अपन गिद्ध दृष्टि जमाए इसकी स्वतंत्रता का पुन: अपहरण करने हेतु सम्बद्ध हो रहे हैं तो दूसरी ओर नाना देशद्रोही जयचंद देश में उपद्रव और अशांति मचाकर उसके अनुशासन और व्यवस्था को भंग कर, इसे पुन: विदेशी शक्तियों के हाथों में सौंप अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं।

अत: ऋतुराज बसंत के अवतरण के शुभ अवसर पर प्रत्येक भारतवासी को यह शपथ ग्रहण करनी होगी कि वह अपना सर्वस्व न्यौछावर करके भी निराशा एवं दुर्दैव रूपी शीत से पीड़ित राष्ट्र में आज्ञामय, सुख-सौभाग्य समन्वित जीवन रूपी शुभ बसन्त लाने के लिए सदैव कटिबद्ध रहेंगे। यही नहीं प्रात: स्मरणीय, जगत वन्द्य पूज्य बापू के अपूर्वस्वप्न को साकार करने हेतु भारत मतें सत्यार्थों में राम-राज्य रूपी बसन्त की प्रतिष्ठा करने में अपना सर्वस्व अर्पण करने से भी नहीं हिचकिचायेंगा। तभी हम वास्तव में बसन्त मनाने के अधिकारी होंगे।

राष्ट्र जीवन तरू के इस निराशा रूपी पतझड़ को समाप्त कर इसे पुन: सुख, शांति, समृद्धि, वैभव, शक्ति एवं आशा के नव पल्लवों और पुष्पाभरणों से समलंकृत करने का बीड़ा उठाना होगा। इस दुर्गम कण्ट-काकीर्ण पथ का अवलम्बन करने हेतु प्रत्येक भारतवासी को पूर्ण सहयोग देने के लिए अपने निजी सुखों हितों संकीर्ण स्वार्थ वृत्तियों, पद लालसा एवं अधिकार गर्व आदि सभी का त्याग करना होगा। राष्ट्रीय जीवन में बसन्त का आविर्भाव करने हेतु पूंजीवाद का सर्वथा उन्मूलन कर, समरसता, समानता, सहिष्णुता, पारस्परिक सहानुभूति आदि की प्रतिष्ठा करनी होगी। प्रत्येक भारतवासी को कठिन परिश्रम, त्यागमय जीवन को अपनाते हुए राष्ट्र दायित्वों और नागरिक कर्त्तव्यों का समुचित और सत्यता से पालन करते हुए समाज और राष्ट्रहित के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना होगा तभी हमारा बसंतोत्सव मनाना सार्थक और सफल हो सकेगा।

देशद्रोह है 370 का समर्थन!

-: अश्विनी कुमार :-

जम्मू-कश्मीर में लगातार हो रहे आतंकवादी हमलों ने हर भारतीय को झकझोर कर रख दिया है। अब समय आ गया है कि भारत का नेतृत्व लक्षणों से जूझने की बजाय मर्ज पर केन्द्रित हो। आज तक हमारी नीति कश्मीर के संबंध में बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण रही है। 13 दिसम्बर, 2001 को भारत की संसद पर हमला हुआ। परमात्मा ने स्वयं हमारे राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा की। जवानों ने अपनी शहादत देकर 200 से ज्यादा सांसदों की जान की रक्षा की। अगर हमलावर संसद में घुस जाते तो न जाने क्या हो जाता। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल जी पर सारे देश की निगाहें लगी हुई थीं। उन्होंने कहा लड़ाई आर-पार की होगी। सीमाओं पर फौजें तैनात कर दी गईं। कई महीने फौज तैनात रही, लेकिन गोली एक नहीं चली। काश! अटल जी ने भारत की मन:स्थिति को समझा होता। आज भी शहीदों की विधवाओं और परिजनों की आंख में आंसू हैं, समूचा देश आहत है। आंखों की आग और आंखों में पानी का एक ही संदेश झलक रहा है-

कुत्सित कलंक का बोध नहीं छोड़ेंगे
इसलिए बिना प्रतिशोध नहीं छोड़ेंगे।

एक्शन के साथ-साथ अब वक्त आ गया है कि अनुच्छेद 370 को खत्म करने के लिए कदम आगे बढ़ाए जाएं। जो लोग अनुच्छेद 370 का समर्थन कर रहे हैं, उनसे सावधान रहने की जरूरत है। मैं आज उस इतिहास में नहीं जाना चाहता कि पंडित जवाहर लाल नेहरू और शेख अब्दुल्ला की दोस्ती के चलते भारतीय संविधान में अनुच्छेद 370 को शामिल करना एक भयंकर भूल थी। घाटी का एक स्कूल मास्टर शेख अब्दुल्ला जम्मू-कश्मीर का मुख्यमंत्री बन गया। अब इस बात का विश्लेषण करने का वक्त आ चुका है कि अनुच्छेद 370 के क्या दुष्परिणाम निकले।

— संपूर्ण भारतवर्ष में एक ही नागरिकता है, जिसे हम भारतीय नागरिकता कहते हैं। जम्मू और कश्मीर में एक 'राज्य नागरिकता' की भी व्यवस्था है। यहां के नागरिकों को भारत के अन्य नागरिकों जैसी सारी सुविधाएं हैं, परंतु अन्य प्रदेशों के नागरिकों को यहां 'प्रदेशी नागरिकता' प्राप्त लोगों जैसी सुविधा प्राप्त नहीं है। इसके परिणामस्वरूप इस प्रदेश का नागरिक तो संपूर्ण भारत में जहां भी चाहे किसी भी संपत्ति को खरीद और बेच सकता है, परंतु यहां जमीन खरीदने-बेचने के लिए प्रदेश की नागरिकता चाहिए। दूसरे प्रदेश का व्यक्ति वहां जमीन नहीं ले सकता।

— यहां के प्रदेश की नौकरियों का जहां तक संबंध है, वहां केवल इसी राज्य के नागरिकों का उन पर अधिकार है, अन्य लोग तो यहां आवेदन तक नहीं दे सकते।

— यहां रह रहे या नियुक्त अन्य प्रदेशों के नागरिक, यहां तक कि बाहर से आए राज्यपाल भी, यहां विधानसभा में मतदान नहीं कर सकते, जबकि लोकसभा में वह मतदान कर सकते हैं। थोड़ी विडम्बनाएँ और देखें:

— इस प्रदेश की महिला का यदि किसी अन्य प्रदेश में विवाह होता है तो उसे अपनी पैतृक संपत्ति और प्रदेश की नागरिकता से हाथ धोना पड़ सकता है, परंतु अगर वह किसी पाकिस्तानी से विवाह करती है तो वह यहां की नागरिकता प्राप्त कर सकता है।

— भारत के संविधान के केवल अनुच्छेद-1 और अनुच्छेद-370 की ही यहां प्रासंगिकता है, अत: भले आप इसे अपना अभिन्न अंग कहते रहिए, इस पूरे भारत में जम्मू-कश्मीर ही ऐसा राज्य है जिसका अलग संविधान है। भारत के संविधान से इसे कुछ लेना-देना नहीं।

— सर्वोच्च न्यायालय द्वारा पारित सारे फैसले भी यहां लागू नहीं होते और संसद द्वारा पारित वही कानून यहां लागू हो सकता है जिसकी जम्मू-कश्मीर की विधानसभा पुष्टि कर दे।

आपने देखा होगा संसद द्वारा पारित कानूनों में यह स्पष्ट लिखा रहता है-"Applicable in whole Indian Union, Excepting J & K." सचमुच यह कितने शर्म की बात है। यहां ध्वज भी एक नहीं दो हैं। एक ध्वज इस प्रदेश का है, जो तिरंगे के साथ-साथ फहराया जाता है। अति संक्षेप में इस अनुच्छेद-370 को लेकर पंडित नेहरू बाबा साहब के पास पहुंचे और तर्क-कुतर्क देकर उनकी राय जाननी चाही। बाबा साहब बोले, ''ऐसा प्रावधान घातक सिद्ध होगा और इसके फलस्वरूप बड़ी अलगाववादी धारणा पनपेगी, आप इसका जिक्र ही न करें।''

पंडित नेहरू ने किसी की भी नहीं सुनी। कड़े विरोध के बावजूद यह अनुच्छेद पारित हो गया। आज तक भारत सरकार अरबों रुपए का धन झोंकती रही है ताकि कश्मीर के अवाम को कोई तकलीफ न हो लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद-370 लागू रखना राष्ट्रद्रोह है या नहीं? अगर यह राष्ट्रद्रोह है तो उसको हटाया जाना ही उचित है। पाकिस्तान को सर्वाधिक अनुकूल राष्ट्र के दर्जे को वापिस लेने में देरी हुई, वैसे ही अलगाववादियों की सुरक्षा वापिस लेने में भी देरी हुई। बेहतर होगा अनुच्छेद-370 खत्म करने में देरी न की जाए, और भी बेहतर होगा कि इस संभावना को टटोला जाए कि क्या इस राज्य को तीन भागों में बांटा जा सकता है? आबादी के असंतुलन से वहां की स्थिति और भी बिगड़ी है। कश्मीरी पंडितों को वहां फिर से बसाने के लिए भी अब तक कुछ नहीं किया गया। अब समय आ गया है कि जम्मू-कश्मीर को मुख्यधारा में लाने के लिए कठोर कदम उठाए जाएं, इस बात की परवाह नहीं की जानी चाहिए कि दुनिया इस बारे में क्या कहती है?

कश्मीर और कश्मीरी हमारे हैं!

भारत की एकता और अखंडता का राज इसके लोगों की ऐसी आपसी समझ, सम्मान व आदर के परस्पर भाव में छिपा हुआ है जिससे सभी लोगों की समग्र पहचान भारतीय के रूप में उभरती है। अत: जब भारत के किसी भी हिस्से में रहने वाले, किसी भी धर्म के मानने वाले, किसी भी नागरिक पर इस देश के किसी भी हिस्से में उसकी क्षेत्रीय पहचान के आधार पर हमला होता है तो वह जाहिर तौर पर हर लिहाज से भारत पर ही हमला होता है और ऐसी हरकत को राष्ट्र विरोधी कार्रवाई में शामिल किये जाने का मजबूत आधार बनता है। अत: सबसे पहले यह समझ लिया जाना चाहिए कि भारत के किसी भी राज्य में यदि किसी कश्मीरी नागरिक को उसकी इस पहचान के आधार पर प्रताड़ित किये जाने की किसी भी व्यक्ति अथवा किसी संस्था के कारकुनों द्वारा कार्रवाई की जाती है तो वह भारत की एकता को तोड़ने की दफाओं के तहत ही आती है।

राष्ट्रवाद का अर्थ केवल नारे लगाना नहीं होता बल्कि इन नारों में छिपी राष्ट्रीय एकता की भावना को जमीन पर उतारना और उसे व्यावहारिक बाना पहनाना भी होता है। जब पूरा जम्मू-कश्मीर भारतीय संघ का अभिन्न और अटूट हिस्सा है तो इसमें रहने वाला हर नागरिक भी इसी भारत का अभिन्न हिस्सा है और भारतीय संविधान के अनुसार उसे वे सभी अधिकार प्राप्त हैं जो उसकी विशिष्टता के अनुरूप उसे दिये गये हैं। यह नियम प्रत्येक अनुसूचित जाति-जनजाति से लेकर भाषाई या धार्मिक अल्पसंख्यक नागरिक पर भी लागू होता है। मगर महाराष्ट्र के यवतमाल समेत कुछ अन्य स्थानों पर जिस तरह कश्मीरी नागरिकों को पुलवामा हत्याकांड के नाम पर अलग-थलग करके मारा-पीटा व सताया जा रहा है वह भी आतंक पैदा करने का ही एक ऐसा स्वरूप है जिसे कुछ लोग सामाजिक वैधता देना चाहते हैं। यह पूरी तरह राष्ट्रविरोधी कार्रवाई है जो पुलवामा में हुई भयानक राष्ट्र विरोधी कार्रवाई के जवाब में की जा रही है। सर्दियों में अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए जो कश्मीरी नागरिक नीचे मैदानों में भारत के विभिन्न राज्यों में उतर आते हैं और शाल व अन्य मुकामी कश्मीरी सामान बेच कर खुद को भारत की विविधता के आह्लाद में समेट देते हैं उनके साथ ऐसा क्रूर व्यवहार हमें आदमी से अचानक दरिंदा बना देता है। हम अपनी ही नजरों में इस कदर गिर जाते हैं कि भारत माता भी हमें अपनी संतान कहने से परहेज करने लगे। मगर दूसरी तरफ जब हम कश्मीर घाटी की खूबसूरती का नजारा करने वहां जाते हैं तो आम कश्मीरी नागरिक हमें अपनी दयानतदारी और मेहमान नवाजी के एहसान से इस कदर लाद देता है कि हमें अपने भारतीय होने पर गर्व होने लगता है।

घाटी में धार्मिक यात्राओं का सारा इंतजाम कश्मीरी जनता के भरोसे ही होता है और हमारी सहूलियत का सारा ख्याल भी कश्मीरी जनता के भरोसे ही होता है और हमारी सहूलियत का सारा ख्याल भी कश्मीर के ही साधारण लोग रखते हैं। मगर जिस तरह पिछले दिनों दिल्ली से हरियाणा की एक रेलगाड़ी में शॉल बेचने वाले दो कश्मीरी नागरिकों को कुछ लोगों ने ट्रेन में ही उनके कश्मीरी होने की वजह से मारा-पीटा उससे डर के वे अपना सारा सामान छोड़कर चलती ट्रेन से ही कूद गये। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में एक चीनी मिल में काम करने वाले कश्मीरी कर्मचारी डर की वजह से अपने राज्य को पलायन करने को मजबूर हो रहे हैं। ऐसी हरकतों से हम स्वयं कश्मीरियों को ही नहीं बल्कि कश्मीर को भी पराश करने की गुस्ताखी कर रहे हैं। अत: इस तरह का काम करने वाले लोगों के खिलाफ राष्ट्रविरोधी धाराओं के तहत कार्रवाई किये जाने की सख्त जरूरत है। इन नादान लोगों को न तो कश्मीरियत के बारे में कुछ पता है और न वहां की महान संस्कृति के बारे में। पाकिस्तान जिस तरह से इस राज्य में अपनी दहशतगर्द कार्रवाइयां करके इस राज्य में अलगाववादी ताकतों को हवा दे रहा है, भारत के अन्य राज्यों में कश्मीरियों के खिलाफ दहशत पैदा करके हम परोक्ष रूप से पाकिस्तान की मदद ही कर रहे हैं क्योंकि वह भी तो यही चाहता है कि भारत में कश्मीरियों को अलग-थलग कर दिया जाये।

हम गंभीरता से सोचें कि जिस कश्मीर में मुस्लिम सूफियों को भी 'ऋषि' कहा जाता है उसकी महान विरासत और परम्पराएं क्या हैं? कश्मीर समस्या ऐसी नहीं है जो हल हो ही न सके। इसके लिए दृढ़ राजनैतिक इच्छाशक्ति की जरूरत है। इस समस्या को भी स्व. इंदिरा गांधी ने 1971 में बांग्लादेश बनवाते समय लगे हाथ निपटा दिया होता अगर अमेरिका ने पाकिस्तान की पीठ पर हाथ रखकर उस समय परमाणु युद्ध का खतरा न पैदा किया होता। हकीकत यह है कि उस समय चीन भी चुपचाप होकर तमाशा देख रहा था क्योंकि भारत के मित्र देश सोवियत संघ ने साफ कर दिया था कि भारतीय उपमहाद्वीप को जंग का अखाड़ा बनाने की किसी भी अमेरिकी कोशिश को वह कामयाब नहीं होने देगा। मगर जाने कहां चले गये हैं अब 'पानी' पर चलने वाले लोग। इसलिए बहुत जरूरी है कि हम ऊँची आवाज में कहें कि कश्मीर हमारा है-कश्मीरी हमारे हैं।

सच्चरित्रता की पक्की नींव धर्म

-**आचार्य श्रवण कुमार,** व्याकरण दर्शनाचार्य

सभी सच्चे धर्मनिष्ठ लोगों में सद्गुण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। ऋषि दयानन्द, महात्मा बुद्ध, शंकराचार्य, गुरुनानक, सन्त कबीर, गुरु रामदास इत्यादि महापुरुषों में सद्गुणों की मात्रा इतनी अधिक दिखाई देती है किसाधारण व्यक्ति उसे देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं। इस प्रकार के धर्मशील महापुरुष अपने प्रभाव से सर्वसाधारण जनता के चारित्रिक मानदण्ड को भी बहुत ऊँचा कर देते हैं। इस प्रकार जनता में चारित्रिक गुण उत्पन्न करने की दृष्टि से धर्म का बड़ा ऊँचा और महत्त्वपूर्ण स्थान है।

धर्म और ईश्वर का विरोध करने वाले लोग कहते हैं कि धर्म को मानने की क्या आवश्यकता है? धर्म को मानने वाले लोग धर्म का यही तो लाभ बताते हैं कि उससे हमारे अन्दर सत्य, न्याय, दया, तप, त्याग और उपकार आदि चरित्र सम्बन्धी सद्गुण उत्पन्न होते हैं। हम इन चरित्र संबंधी सद्गुणों को अपने भीतर धर्म के बिना भी उत्पन्न कर सकते हैं। अनेक नास्तिक लोगों में ये सद्गुण बड़ी ऊँची मात्रा में पाए जाते हैं। हम अपने व्यवहार में इन सद्गुणों का पालन करते रहेंगे। हमें धर्म को मानकर आत्मा, परमात्मा, लोक, परलोक और कर्मफल आदि के जंजाल में पड़नेकी क्या आवश्यकता है?

धर्म विरोधियों का यह कथन ऊपर-ऊपर से सुनने में रोचक प्रतीत होता है। गहराई में विचार करने पर पता चलता है कि धर्म को माने बिना, आत्मा-परमात्मा की सत्ता और लोक-परलोक तथा कर्मफल के सिद्धांत को माने बिना चरित्र सम्बन्धी सद्गुण खड़े नहीं रह सकते। हमारी सच्चरित्रता आत्मा-परमात्मा और लोक-परलोक तथा कर्मफल के सिद्धांत के आधार पर ही टिकी हुई है।

यदि हम नास्तिक लोगों की बातें मानकर भौतिकवादी बन जाएँ और यह मानने लग पड़े कि आत्मा नाम की कोई सत्ता नहीं है, जिसे हम आत्मा कहते हैं वह तो प्राकृतिक जड़ पदार्थों के संयोग का परिणाम है, जिस प्रकार आग और पानी के संयोग का परिणाम जल की उष्णता है। अथवा जैसे पोटैशियम फैरो साइनाइड के हल्के पीले से रंग के घोल में फैरिक क्लोराइड का हल्केपीले से रंग के घोल मिला देने से उसमें गहरा नीला रंग आ जाता है। हमारे उत्पन्न होने से पूर्व हमारा आत्मा नहीं था, और हमारे मर जाने के बाद न कोई अगला जन्म होगा, बस जो कुछ है यह हमारा वर्तमान जन्म ही है। इस जन्म में हम जो कुछ कर लें, कर लें, इस जन्म में हम जो कुछ सुख भोग भोगना चाहें भोग लें, आगे कुछ नहीं होने और मिलने वाला है, आँख मिर्ची और सब कुछ समाप्त, भौतिकतावादी नास्तिक बनकर यदि हम मानने लग पड़े कि परमात्मा की भी सत्ता कुछ नहीं है - इस जगत् को बनाने वाला और चलाने वाला तथा हमारे कर्मों का फल देने वाला परमात्मा कोई नही है तो हमारी सच्चरित्रता ठहर नहीं सकेगी।

जब हमारा केवल यही जन्म है और इसी में हम जो कर लें और जो सुख भोग भोगना चाहें भोग लें, तो हममें बुरे कर्मों से बचने की प्रवृत्ति नहीं होगी। तब हमारे अंदर यह प्रवृत्ति जाग उठेगी कि यह थोड़ा सा तो समय हमारे पास है जिसमें हम जो सुख भोगना चाहें भाग सकते हैं, इसीलिए जिस किसी तरह भी हमें अपने जीवन को सुखी बनाकर रखना चाहिए। इस प्रवृत्ति के वश में आकर हम अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए बुरे कर्म करने से रोक नहीं पायेंगे। बुरे कर्मों का दण्ड देने वाला परमात्मा तो कोई है ही नहीं, जिसका हमें भय रहे। अगला जनम भी कोई नहीं है जिसमें हमें बुरे कर्मों का फल भोगना पड़े। तो हमें बुरे कर्मों से बचकर सच्चरित्र बनने की प्रेरणा क्यों होगी?

आत्मा-परमात्मा की सत्ता, पुनर्जन्म और कर्मफल के सिद्धांत को न मानकर केवल यही एक जन्म मानने की व्यवस्था में तो हमारा उद्देश्य केवल अपने इस वर्तमान जीवन को सुखी बनाना रह जायेगा। हमें अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए झूठ-फरेब, धोखे-धड़ी और अन्याय-अत्याचार का भी अवलम्बन करना पड़े तो वह कर लेना चाहिए। इस प्रकार के दुराचरणों से हमें क्यों रुकना चाहिए?

कहा जा सकता है कि जैसे हम सुखी बनना चाहते हैं वैसे ही और लोग भी सुखी बनना चाहते हैं। इसलिए झूठ-फरेब आदि का सहारा लेकर हमें दूसरों के जीवन को दुःखी नहीं बनाना चाहिए। परंतु यदि कोई अपनी यह मनोवृत्ति बना ले कि दूसरे लोग मेरे किसी आचरण से दुःखी होते हैं तो होते रहें, मुझे तो अपने जीवन को सुखी बनाना है। मैं तो जैसे भी होगा अपने को सुखी बनाऊँगा। तो ऐसी मनोवृत्ति वाले व्यक्ति को दुराचरण से कैसे रोका जा सकता है? कहा जा सकता है कि दूसरे लोग उसके दुर्व्यवहारों से तंग आकर उसे पकड़ लेंगे और दण्डित करेंगे और इस प्रकार उसे अपने बुरे कर्मों का फल दुःख मिलेगा, अतः उसे बुरे कर्मों से बचने की सीख स्वयं मिल जायेगी कि उसे बुरे कर्मों से बचना चाहिए। परंतु पकड़ में तो कोई व्यक्ति अपनी असावधानी और गलती से आता है। यदि कोई व्यक्ति पूर्ण सावधान होकर चतुराई और बुद्धिमत्ता से दूसरों के साथ दुर्व्यवहार करके अपने को सुखी बनाता रहे तो ऐसे व्यक्ति को दुराचरण से कैसे रोका जा सकेगा? फिर यदि कोई यह सोच ले कि कभी अपनी असावधानी से पकड़ भी लिया गया और उससे दण्डित होकर कुछ दुःख भोगना भी पड़ गया तो क्या बात है? अधिकतर तो मैं दूसरों को ठग और लूटकर अपने जीवन को सुखी ही रहता हूँ, तो ऐसे व्यक्ति को दुराचरण से कैसे रोका जा सकेगा? यदि हम छिपकर पाप करते हैं? उससे तो हम अपने जीवन को सुखी बना रहे हैं। आत्मा-परमात्मा की सत्ता, पुनर्जन्म और कर्मफल के सिद्धांत को न मानने वाले भौतिकवादी नास्तिकों के पास इन प्रश्नों का कोई समाधान नहीं है।

आत्मा-परमात्मा आदि की सत्ता को स्वीकार न करने की अवस्था में तो मनुष्य की प्रवृत्ति स्वभावतः चार्वाकों की सी हो जायेगी और वह चार्वाकों के स्वर में स्वर मिलाकर कहने लगेगा - 'मौत से कोई भी बच नहीं सकता इसलिए जब तक जीना है सुख से जीना चाहिए। क्योंकि मरने के बाद जलकर राख हो जाने के पीछे सुख भोगने के लिए शरीर कहाँ से मिलेगा? जब तक जीना है सुख से जीना चाहिए और अपने को सुखी बनाने के लिए ऋण लेकर भी घी पीते रहना चाहिए।'

फिर एक बात और यहाँ विचारने की है। आत्मा और परमात्मा को न मानने की अवस्था में अच्छे और बुरे, सच्चारित्र्य का भेद कैसे किया जा सकेगा? हमारे किसी कर्म को अच्छा या बुरा कहकर उसकी अच्छाई और बुराई का निर्माण करने वाला कोई परमात्मा या आत्मा तो है ही नहीं। भौतिकवादी नास्तिकों के मत में परमात्मा की सत्ता तो बिल्कुल ही नहीं है। आत्मा की भी वास्तविक सत्ता नहीं है। आत्मा या चेतना जो कुछ है केवल प्राकृतिक जड़ पदार्थों के एक विशेष प्रकार के संयोग का परिणाम है। जिस प्रकार आग और जल के एक विशेष संयाग का परिणाम जल की उष्णता है। ऐसी अवस्था में, जिस प्रकार जल की उष्णता प्राकृतिक होने के कारण जड़ ही है, उसी प्रकार हमारे शरीर के प्राकृतिक जड़ पदार्थों के संयोग का परिणाम होने के कारण प्राकृतिक होने से हमारा आत्मा भी वस्तुतः जड़ ही है, ऐसा हमें माना पड़ेगा और हमें यह भी मानना पड़ेगा कि यह हमारा आत्मा कोई पृथक पदार्थ नहीं, हमारे शरीर के प्राकृतिक पदार्थों में रहने वाला उन पदार्थों का एक गुणमात्र है। तो जिस आत्मा की कोई पृथक सत्ता ही नहीं है, जो हमारे शरीर के प्राकृतिक जड़ पदार्थों का ही एक गुणमात्र है और जड़ है, वह आत्मा हमारे कर्मों की अच्छाई और बुराई का निर्णय किस प्रकार कर सकेगा? इस प्रकार हमारे कर्मों की अच्छाई या बुराई का निर्णय करने वाली कोई सत्ता न होने के कारण, हमारे कोई भी कर्म अच्छे या बुरे नहीं रहेंगे। हमारे सभी कर्म एक जैसे ही हो जायेंगे। हम जैसा चाहें कर लें। हम किसी के किसी कर्म को दुराचरण या अनैतिक और सदाचरण या नैतिक नहीं कह सकेंगे।

इसलिए धर्म के बिना सच्चरित्रता की नींव खड़ी नहीं रह सकती। धर्म आत्मा को भी मानता है और परमात्मा को भी। आत्मा अपनी स्वतंत्रता से अच्छे या बुरे कर्म करता है। अपने कर्मों का फल भोगने में आत्मा परमात्मा के अधीन है। बुरे कर्मों का फल आत्मा को परमात्मा की व्यवस्था के अधीन रहकर दुःख के रूप में भोगना पड़ता है, और अच्छे कर्मों का फल सुख के रूप में। परमात्मा की व्यवस्था के अधीन रहकर कर्मों का फल आवश्यक रूप से कर्मफल भोग से आत्मा बच नहीं सकता है। कर्मफल प्रदाता परमात्मा की व्यवस्था के अधीन रहकर कर्मों का फल आवश्यक रूप से भोगे जाने का यह सिद्धांत आत्मा को बुरे कर्मों से दूर रहने की प्रेरणा करता है। धर्म में परलोक और पुनर्जन्म के सिद्धांत को भी माना जाता है। यदि इस जन्म में हमें परमात्मा ने हमारे कर्मों का फल दुःख के रूप में नहीं दिया है तो अगले जन्म में दिया जायेगा, उससे छूट नहीं सकते, अगले जन्म में भी फल मिल सकने का यह सिद्धांत हमारे मन में बुरे कर्मों के प्रति और भी अधिक भय उत्पन्न कर देता है। कर्मफल भोग के इस भय के कारण हम दुराचरणों से बच कर सदाचरण से रहने का प्रयत्न करने लगते हैं। ऐसा करते-करते हम स्वभाव से ही अच्छे आचरण करने वाले बन जाते हैं। परमात्मा के भय के कारण बुरे कर्मों से बचे रहने की बात हमारे मन की पृष्ठभूमि में बहुत गहराई से बैठी रहती है। धर्म सृष्टि के आरम्भ से इस प्रकार हमें सच्चारित्र्य सिखाता आ रहा है।

धर्म द्वारा की जाने वाली अपनी इस सेवा के कारण संसार को धर्म का धन्यवाद करना चाहिए। जिस दिन संसार से धर्म को सर्वथा मिटा दिया जायेगा, जिस दिन लोग आत्मा, परमात्मा, लोक और परलोक को मानना सर्वथा छोड़ देंगे, जिस दिन कर्मफल भोग के सिद्धांत में लोगों का विश्वास बिल्कुल नहीं रहेगा, जिस दिन परमात्मा की भक्ति द्वारा परमात्मा के गुणों को अपने भीतर धारण करने वाले धर्मनिष्ठ लोग सर्वथा पैदा होना बन्द हो जायेंगे, उस दिन के थोड़े समय के पश्चात संसार से सच्चरित्रता दिखती है उसका मूल स्रोत धर्म ही है।

नास्तिक लोगों में जो कुछ सच्चरित्रता दिखाई पड़ती है उसका मूल स्रोत भी धर्म ही है। धर्म द्वारा सिखाए गए, परम्परा से चले आ रहे सच्चरित्रता के तत्वों को

(शेष पृष्ठ 5 पर)

ईश्वर भक्त महर्षि देवदयानन्द

195वें जन्मदिवस के उपलक्ष में

-: अरुणा सतीजा :-

विद्वानों एवं वृद्धजनों के मुख से सुना है कि एक ऐसा हीरा होता है जिसकी चारों ओर कोणें निकली होती है। इस हीरे को जिस कोण से भी देखो वहीं से देदीप्यमान कांतियुक्त एवं चमकदार दिखाई देती है। ठीक यही बात महर्षि देवदयानन्द के सम्बन्ध में भी कहीं जा सकती है। महर्षि का सम्पूर्ण जीवन उस हीरे के समान है जो हर ओर से चमकता है। उनके पावन पवित्र जन्मदिवस (28 फरवरी 2019) के शुभ अवसर पर उनके जीवन दर्शन के अनेक पहलुओं में से एक छोटे से परन्तु अति महत्वपूर्ण ''भक्ति'' पहलु पर आज विचार करते हैं-

यद्यपि महर्षि का जन्म सौराष्ट्र में हुआ था परंतु उस महापुरुष ने अपने सत्य-मधुर उपदेशों से सम्पूर्ण भारत को ही सुराष्ट्र बना दिया।

महर्षि स्वयं ईश्वर भक्त थे। मेरी दृष्टि से वह केवल भक्त ही नहीं अपितु भक्त शिरोमणि कहलाने के हकदार थे। सन्त महात्माओं ने जितने भक्त के लक्षण अपने ग्रन्थों में लिखे हैं वे महर्षि के जीवन में इस प्रकार ओत प्रोत है जैसे मणि माला में ''मणि'' प्रभु भक्ति का कोई ऐसा सद्गुण रूपी सुमन नहीं जो महर्षि के जीवन रूपी उद्यान में विकसित न हुआ हो।

उनकी भक्ति का मूल आधार वेद ज्ञान था। इसीलिये उन्हें 'वेदों वाला' कहते हैं। वेद उनके हृदय में थे, मस्तिष्क में थे और जिह्वा पर थे। वे वेद के लिये जिये और वेद के लिये ही मरे।

वेदों के अनुसार मानव जीवन का अंतिम एवं परम लक्ष्य ईश्वर साक्षात्कार करना है क्योंकि सभी पूर्ण एवं स्थायी सुख चाहते हैं और दुःखों से पूर्ण छुटकारा भी। जो मात्र ईश्वर भक्ति से संभव है। ईश्वर की प्राप्ति तो श्रेष्ठ मार्ग पर चल कर ही हो सकती है। श्रेष्ठमार्ग कौन सा है? श्रेष्ठ मार्ग वह है जिन रास्तों से श्रेष्ठ व महान पुरुष चलते व गुजरते हुए आये हैं। परंतु श्रेष्ठ मार्ग पर चलना तो अति कठिन है क्योंकि इस मार्ग में काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष जैसे अनेकों अन्य शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना कोई सरल कार्य नही है। इन सब में से शक्तिशाली शत्रु है अहंकार अर्थात घमंड मैं - जब कोई व्यक्ति स्वयं में धन, ज्ञान, वंश एवं सुंदरता आदि विषय में स्वयं को अन्य से उत्तम मानने लगता है तब उसे अहंकार आ जाता है। अहंकारी व्यक्ति का संतुलन बिगड़ जाता है और वह विकारों का शिकार होकर अनुचित अर्थात् पापमय कार्य करता है तब उसे ईश्वर छोड़ देता है। इतिहासइन अहंकारियों के विनाश का गवाह है जैसे रावण, दुर्योधन आदि।

शरीर नश्वर है, सम्पत्ति चंचल है। केवल धर्म ही शाश्वत है। प्रभु जब भी चाहे किसी वस्तु को वापस ले सकता है। इसलिये ईश्वर द्वारा प्रदान नियामतों का प्रयोग विनम्र होकर, ईश्वर का धन्यवाद करते हुए, उसे शीश झुकाते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिए, यही सच्ची

भक्त है। सुख शांति का आधार है तथा जीवन का लक्ष्य है हम भगवान को प्रायः कोसते रहते हैं तूने हमें यह नहीं दिया वह नहीं दिया। अगर थोड़ा सा कष्ट आ जाए तो फिर देखो न जाने उसे किन-किन गलत शब्दों का प्रयोग कर उसे कोसते हैं।

एक दिन लुकमान के मालिक ने उसे जानबूझ कर कड़वा फल खाने को दिया। लुकमान उसे बड़े स्वाद से खाता गया। मालिक ने कहा यह फल तो कड़वा था। लुकमान ने कहा- मालिक आपने जो मिठास मुझे पहले दी है उसके सामने यह कड़वाहट कुछ भी नहीं है। अतः हम भगवान की अनगिनत कृपाओं को तो भूल जाते हैं परंतु दुःख की एक कड़वाहट सदा चुभती रहती है।

एक दिन एक दुःखी व्यक्ति ने भगवान से पूछा आप हमें रुलाते क्यों हो तो ईश्वर ने कहा- जब किसी वस्तु को जंग लग जाता है तो उसे तपाते हैं मैं भी जंग लगे लोगों को नरक की आग में तपा कर सही करता हूँ।

परमेश्वर की कृपा व मित्रता किन्हीं विरले संतों को प्राप्त होती है और वह विलक्षण गुणों से युक्त हो जाते हैं। जिस प्रकार आकाश से वर्षा की धारा भूमि पर प्रवाहित होती है, उसी प्रकार दिव्य विचार उसके मानस पटल पर प्रवाहित होते हैं जो अनमोल सम्पत्ति है-

न दिया न बाती न तेल
लेकिन उजियारा ही उजियारा

क्योंकि भीतर एक ज्योति जल जाती है

यह ज्ञान ज्योति केवल मानव मन में ही प्रज्ज्वलित होती है क्योंकि मानव ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। मानव सर्वश्रेष्ठ है इसलिये सर्वश्रेष्ठ कार्य कर सकता है। ईश्वर ने उसे प्रज्ञा बुद्धि एवं विवेक दिया है।

मानव जीवन दुर्लभ है मिले न बारम्बार
ज्यों पका फल लगे न दूसरी बार

यह पहला और अंतिम मौका है। यदि इसे सफल बनाना है तो कण-कण में विद्यमान ईश्वर की उपासना करो। बिना ईश्वर की भक्ति के दुःख दूर नहीं हो सकता फिर वही चौरासी का चक्कर।

उपरोक्त सबका यह अर्थ नहीं कि संसार छोड़ दो या सांसारिक कर्त्तव्यों से विमुक्त हो जाओ परंतु भौतिकता तथा आध्यात्मिकता का सुंदर व संतुलित समन्वय करके चलो। संसार को अच्छी तरह चलाओ, धर्मानुसार।

शरीर से उत्तम कर्म करो, मन तथा जिह्वा से नाम जपो, आत्मा को बलवान बनाओ। जब आत्मा बलवान होती है तो मन शिव संकल्प वाला होगा। शिव संकल्प वाला मन ही श्रेष्ठ रास्ते पर चलेगा।

परोपकार करो, ईश्वर के बंदों को सुखी करो। ईश्वर के प्राणियों की सेवा करोगे तो ईश्वर हमें सुखरूपी ईनाम जरूर देगा। ईश्वर भक्ति में बड़ी शक्ति है। अब प्रश्न है कि सच्ची भक्ति क्या है। सच्ची भक्ति का सच्चा स्वरूप है उपासना। उस परम पिता परमात्मा की सच्ची उपासना- सत्य आचरण पंच महायज्ञों का प्रतिदिन करना, ईश्वर की उन्नति, प्राण एवं अपान की पुष्टि,अध्यापक (गुरु) उपदेशक और विद्वानों का सतसंग तथा जीवात्मा को प्राप्त करने तथा जानने का प्रयत्न करना आदि आदि। हमारी आत्मा पर जो पाप के धब्बे लगे हैं उन्हें हम साफ करें ताकि ईश्वर के पास जब हम जाएं उसे मुंह दिखाने लायक हों।

धर्म से कर्म सदा बड़ा रहा है। पुरुषार्थी पुरुष को परमेश्वर शीघ्र प्राप्त हाता है। परमेश्वर अति दयालु है जो जीव उसकी प्राप्ति के लिये तन, मन व धन से श्रद्धापूर्वक पुरुषार्थ करता है परमात्मा उनको शीघ्र प्राप्त होता है। तब वह प्रभु अपनी अनन्त शक्ति रूपी हाथों से उस जीव को उठा कर अपनी गोद में सदा के लिये ले लेता है और फिर उसे किसी प्रकार का दुःख नहीं देता। इसलिये वेद कहता है-

न त्वे दूते अमृता मादयन्ते
महर्षि की जीवनधारा, अक्षुण बनी रहे।
ओ३म् शांति शांति शांति

सच्चरित्रता की पक्की .....

(पृष्ठ 4 का शेष)

नास्तिक लोगों ने भी स्वीकार कर लिया है। जैसे गंगा से निकली हुई नहर में से निकली हुई अन्य नहर बहुत दूर के खेतों में जाकर पानी दे देती है और उन खेतों और उनके किसानों को पता नहीं होता कि यह पानी गंगा का है, इसी प्रकार नास्तिकों को भी पता नहीं है उनमें जो सच्चरित्रता है वह मूल रूप से धर्म की गंगा से ही निकलती है। नास्तिकता का दर्शनशास्त्र, जैसा ऊपर दिखाया गया है, स्वयं सच्चरित्रता को जन्म नहीं दे सकता।

जब धर्म नहीं रहेगा तो सच्चरित्रता भी नहीं रहेगी और संसार में अन्धपरम्परा चल पड़ेगी। कोई किसी को सन्मार्ग न दिखा सकेगा। तब संसार के लोगों में मात्स्य-न्याय चलने लगेगा। जैसे बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है वैसे ही शक्तिशाली लोग दुर्बल लोगों को खाने लग पड़ेंगे। उस घोर अधर्म की अवस्था में न स्वतंत्रता रहेगी और न किसी राष्ट्र की किसी प्रकार कोई उन्नति।

परंतु संसार यह सुनकर निश्चिन्त रहे कि राम, कृष्ण, दयानन्द, विवेकानन्द, महात्मा गांधी जैसे महापुरुष धर्मनिष्ठ लोगों के समय-समय पर जन्म लेते रहने के कारण वह बुरा दिन कभी न आने पायेगा। धर्म को नास्तिकावद से भय नहीं है। आत्मा-परमात्मा की सत्ता और पुनर्जन्म तथा कर्मफल के सिद्धांत को सिद्ध करने के लिए धर्म वालों के पास प्रबल तर्क हैं। पहले भी नास्तिक लोग आते रहे हैं। हम आस्तिक लोग अपने तर्कों से उनकी बातों का खण्डन करते रहे हैं।

यहाँ एक बार और भी देखने की है। सच्चरित्र रहने के लिए हमें सच्चरित्र पुरुषों की संगति की आवश्यकता पड़ती है। अच्छी बुरी जैसी संगति में रहा करते हैं वैसे बन जाया करते हैं। संसार में हमें पूर्ण सच्चरित्र पुरुषों की संगति प्रायः प्राप्त नहीं होती। धर्म इस संबंध में भी हमारी सहायता करता है। परम पुरुष परमात्मा की उपासना व भक्ति करके सबसे अधिक सच्चरित्र सत्ता की संगति प्राप्त होती है। उपासना द्वारा प्रभु की संगति में बैठे रहने से हमारे अंदर चरित्र संबंधी सब सद्गुण आ जाते हैं।

इस प्रकार विचार करने से यही निष्कर्ष निकलता है कि बिना धर्म के सच्चरित्रता की दीवाल खड़ी नहीं हो सकती। किसी भी दृष्टि से हम देखें, अन्ततः हमें सच्चरित्रता का आधार धर्म को ही मानना पड़ेगा। धर्म की वृद्धि सच्चरित्रता की वृद्धि है। धर्म की हानि सच्चरित्रता की हानि है। सच्चरित्रता की वृद्धि से ही समाज में सुख शांति की स्थापना होगी, परस्पर एक दूसरे की उन्नत्यर्थ मनुष्य अग्रसर होंगे। इसलिए हम सभी को चाहिए कि धर्म की वृद्धि के लिए मन-तन-धन से समर्पित होकर सच्चरित्रता नींव के मजबूत पत्थर बनकर अपनी कर्त्तव्य पारायणता का परिचय दें।

-पाणिनी महाविद्यालय, रेवली, सोनीपत

-: शिवनारायण उपाध्याय :-

यजुर्वेद अध्याय 13 के मंत्र में 22 से 25 तक के मंत्रों की दृष्टि इन्द्रग्नि है। इन मंत्रों में विज्ञान, सृष्टि रचना, पति-पत्नी का आपसी व्यवहार आदि विषयों पर गहन चर्चा की गई है।

यास्तेऽअग्ने सूर्य्ये रूचो दिवमातन्वन्ति रश्मिभिः।
ता भिर्नोऽअद्य सर्वाभी रूचे जनाय नरकृधि॥

पदार्थ— हे (अग्ने) अग्नि के समान तेजस्वी विदुषी स्त्री। (याः) जो (ते) तेरी रुचि है (ताभिः) उन (सर्वामि) सब रुचियों से युक्त (न) हमको जैसे (रुच) दीप्तियाँ (सूर्य्ये) सूर्य में (रश्मिभीः) किरणों से (दिवम्) प्रकाश को (आतन्वन्ति) अच्छे प्रकार विस्तार युक्त करती है। वैसे तू भी अच्छे प्रकार विस्तृत सुख युक्त और (अद्य) आज (रुचे) रुचि कराने वाले (जनाय) मनुष्यों के लिए (नः) हम लोगों को प्रीति युक्त (कृधि) कर।

भावार्थ— यह मंत्र वाचकलुप्तोपमालंकार है। जैसे सौर मण्डल में सूर्य की किरणें सब वस्तुओं को प्रकाशित करती है और प्राणियों में रुचि उत्पन्न करती है वैसे ही एक विदुषी श्रेष्ठ स्त्री घर के सब कार्यों का प्रकाश करती है। वह परिवार में सबको अपनी-अपनी रुचि के अनुकूल कार्य देकर उनमें प्रसन्नता का भाव उत्पन्न करती है। फलस्वरूप सभी स्त्री-पुरुषों में प्रीति उत्पन्न होती है और इससे परिवार का कल्याण होता है।

विज्ञान का विकास कब होगा? इस पर वेद का कथन है-

या वो देवाः सूर्य्ये सचो गोष्वश्वेषु या रूचः।
इन्द्राग्नी ताभिः सर्वाभी रूचं नो धत्त बृहस्पते॥

यजु. 13.23

पदार्थ— हे (देवाः) विद्वानो। आप सब लोग (याः) जो (वः) आपकी सूर्य्ये में (रुचः) रुचि और (याः) जो (गोषुः) गायों और (अश्वेषु) घोड़ों आदि में (रुचः) प्रीति है (ताभि), उन (सर्वाभिः) सब रुचियों से (नः) हमारे बीच (रुचम्) कामना, (इन्द्राग्नी) बिजली और सूर्यवत् अध्यापक और उपदेशक जैसे धारण करें वैसे (धत्त) धारण करो। हे (बृहस्पते) पक्षपात छोड़कर परीक्षा कराने वाले पूर्ण विद्या युक्त आप (नः) हमारी परीक्षा कीजिए।

भावार्थ— हे विद्वानो! आप सब लोग जो आपकी सूर्य में रुचि और जो गौओं और घोड़ों आदि में प्रीति है। उन सब रुचियों में हमारे बीच, जैसी रुचि विद्युत और सूर्य के समान तेजस्वी अध्यापक और उपदेशक धारण करें, वैसे धारण करो। आप पक्षपात छोड़कर हमारे ज्ञान की परीक्षा लो। क्योंकि जब तक परीक्षा नहीं होती तब तक यह नहीं जाना जा सकता है कि कोई व्यक्ति पूर्ण ज्ञान सम्पन्न है अथवा इसका ज्ञान अधूरा है। अगले मंत्र में सुख कैसे प्राप्त होगा? इसका वर्णन है-

इन्द्राग्नी ऋषि

विराड् ज्योतिरधारयत् स्वराड ज्योतिरधारयत्।
प्रजापतिष्ट्वा सादयतु पृष्ठे पृथिव्या ज्योतिष्मतीम्।
विश्वस्मै प्राणायापावाय व्यानाय विश्वं ज्योतिर्यच्छ।
अग्निष्टे ऽ धिपतिस्तया देवतयाङ्गिरस्वद ध्रुवासीद॥

यजुः 13.24

पदार्थ— हे विराट अनेक प्रकार की विद्याओं में प्रकाशमान स्त्री। (ज्योतिः) विद्या की उन्नति को (अधारयत्) धारण कर, करावे जो (स्वराट्) सब धर्म युक्त व्यवहारों में शुद्ध आचारवान् पुरुष, (ज्योतिः) विद्युत आदि के प्रकाश को (अधारयत्) धारण करे, करावे वे दोनों स्त्री-पुरुष सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त होवें। हे स्त्री! जो (अग्निः) अग्नि के समान तेजस्वी विज्ञान युक्त (ते) तेरा (अधिपतिः) स्वामी है (तया) उस (देवतया) सुन्दर देव स्वरूप पति के समान तू (अङ्गिरस्वत्) सूत्रात्मा वायु के समान (ध्रुवा) दृढ़ता से (सीद) हो। हे पुरुष! जो अग्नि के समान तेज धारिणी तेरा रक्षा करने वाली तेरी पत्नी है उस देवी के साथ तू प्राणों के समान प्रीति पूर्वक निश्चय करके स्थित हो। हे स्त्री! (प्रजापतिः) प्रजा का रक्षक तेरा पति (पृथिव्याः) भूमि के (पृष्ठे) ऊपर (विश्वस्मै) सब (प्राणाय) सुख की चेष्ट से हेतु (अपानाय) दुःख हटाने का साधन (व्यानाय) सब श्रेष्ठ गुण कर्म और भाव के प्रचार के हेतु प्राण विद्या के लिए जिस (ज्योतिष्मतिम्) प्रशंसित विद्या के ज्ञान से युक्त (त्वा) तुझको (सादयतु) उत्तम अधिकार पर स्थापित करे सो तू (विश्वम्) समग्र (ज्योतिः) विज्ञान को (यच्छ) ग्रहण कर और इस विज्ञान की प्राप्ति के लिए अपने पति को स्थिर कर।

भावार्थ— इस मंत्र में बतलाया गया है कि स्त्री, पुरुषों को चाहिए कि परस्पर प्रीति के साथ रहते हुए एक दूसरे के कर्त्तव्यों का बोध कराते हयु और एकदूसरे का सहयोग करते हुए संसार में सुखी जीवन यापित करते हुए विज्ञान का भी विकास करते रहें।

अगले मंत्र में मधु (चैत्र) और माधव (वैशाख) माह जिन्हें मिला कर वसन्त ऋतु बनतीहै का वर्णन किया गया है।

मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृत्तऽअग्नेरन्तः
श्लेषोऽसिकल्पतां।
द्यावा पृथिवी कल्पन्तामापऽओषधय
कल्पतामग्नयः पृथङ्
मम ज्यैष्ठयाय सव्रताः। येऽ अग्नयः
समनसोऽन्तरा
द्यावा पृथिवीऽइमे वासन्तिकावृतऽ अभि
कल्पमानाऽइन्द्रमिव देवाऽ
अभि संविशन्तु तया देवतयाङ्गिर
स्वद् ध्रुवे सीदतम्॥

यजु. 13.25

पदार्थ— जैसे (मम) मेरे (ज्येष्ठ्याय) ज्येष्ठ महीने में व्यवहार वा मेरी श्रेष्ठता के लिए जो (अग्नेः) गरती के निमित्त अग्नि में उत्पन्न होने वाले जिनके (अन्तः श्लेषः) भीतर बहुत प्रकार के वायु का सम्बन्ध (असि) होता है वे (मधु) मधुर सुगबन्ध युक्त चैत्र (च) इनके सम्बन्धी पदार्थ युक्त (वासंतिक) वसन्त महीने में हुए (ऋतु) सबको सुख प्राप्ति के साधन ऋतु सुख के लिए (कल्पेताम्) समर्थ होवे। जिन चैत्र और वैशाख महीनों में (द्यावा-पृथिवी) सूर्य और पृथ्वी (आपः) जल भी भोग में (कल्पन्ताम्) आनन्ददायक हों। (पृथक्) भिन्न भिन्न (ओषधयः) यवादि अथवा सोमलता आदि ओषधि और (अग्नयः) विद्युत आदि अग्नि भी (कल्पन्ताम्) कार्य साधक होवें। हे (सव्रताः) निरन्तर वर्तमान सत्यभाषणादि व्रतों से युक्त (समनसः) विज्ञान वाले (देवाः) विद्वान्। (ये) जो लोग (वासन्तिकौ ऋतु) वसन्त ऋतु में हुए चैत्र और वैशाख और पूर्वक से (अन्तरा) बीच में हुए (अग्नयः) अग्नि हैं उनको (अभि कल्पमानाः) सम्मुख होकर कार्य में युक्त करते हुए आप लोग (इन्द्र मिव) जैसे उत्तम ऐश्वर्य प्राप्त हों जैसे (अभिसंविशन्तु) सब ओर से प्रवेश करो जैसे (इमे) ये (द्यावा पृथिवी) प्रकाश और भूमि (तया) उस (देवतया) परम पूज्य परमेश्वर रूप देवता के सामर्थ्य के साथ (अङ्गिरस्वत्) प्राण के समान (ध्रुवे) दृढ़ता से वर्तते हैं वैसे तुम दोनों स्त्री-पुरुष सदा संयुक्त (यदितम्) स्थिर रहो।

भावार्थ— इस मंत्र में यह बतलाया गया है कि स्त्री-पुरुष वसन्त ऋतु में किस प्रकार मिल कर रहें।

आर्य राष्ट्र बनायेंगे

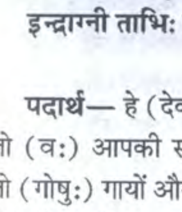

स्वामी दयानन्द सरस्वती

संसार के श्रेष्ठ पुरुषों एक हो जाओ

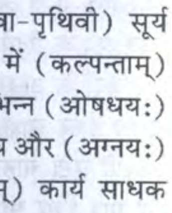

स्वामी इन्द्रवेश

।। ओ३म् ।।

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अपघ्नन्तो अरावणः।।

आर्य समाज के सशक्त युवा संगठन

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं लोकप्रिय पत्रिका 'राजधर्म'

की स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित

स्वर्ण जयन्ती समारोह

दिनांक : 9, 10 मार्च, 2019 (शनिवार, रविवार)

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

आप सादर सपरिवार आमंत्रित हैं। अधिक से अधिक युवाओं (युवक, युवतियों) को आर्य समाज से जोड़ने के लिए समारोह में लेकर आयें!

मानव शरीर - ईश्वरीय सत्ता का प्रत्यक्ष प्रमाण

सदियों से लोगों में इस बात की बहस छिड़ी हुई है कि क्या ईश्वर है अथवा नहीं। इस कारण मानव समुदाय आज दो वर्गों में विभाजित हो गया है। एक बड़ा वर्ग वो है जो ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखता है, वहीं दूसरा वर्ग वो है जो मानता है कि ईश्वर नाम की कोई चीज नहीं है। संसार में जो कुछ भी हो रहा है वो अपने आप ही हो रहा है। इनकी संख्या भी करोड़ों में है।

यहाँ हम न तो धर्म ग्रन्थों का सहारा ले रहे हैं और न ही कोई तर्क-वितर्क, बल्कि कुछ तथ्यों को प्रस्तुत कर रहे हैं, देखना होगा कि ये तथ्य किस ओर संकेत कर रहे हैं।

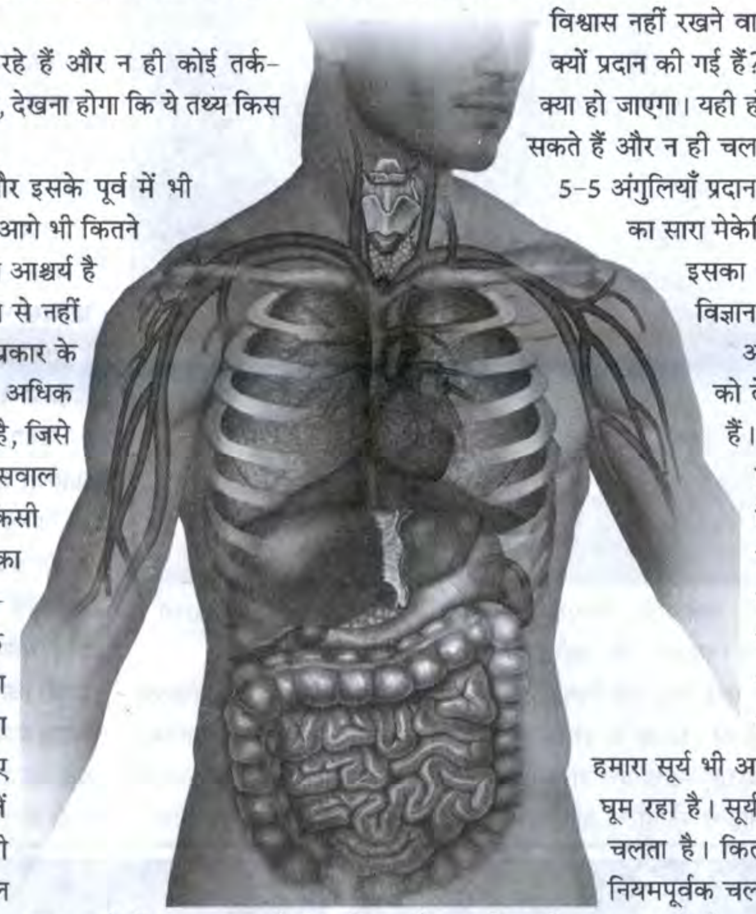

आज दुनियाँ में अरबों-खरबों लोग हैं और इसके पूर्व में भी अरबों-खरबों लोग पैदा हुए और मर भी गए। आगे भी कितने अरबों-खरबों लोग पैदा होंगे। पर कितना बड़ा आश्चर्य है कि इनमें से किसी का भी चेहरा किसी अन्य से नहीं मिलता है। यानि सबके चेहरे अलग-अलग प्रकार के हैं। यहाँ तक कि जुड़वाँ बच्चों में भी बहुत अधिक समानता होते हुए उनमें भी कुछ अन्तर होता है, जिसे उसकी माँ अवश्य ही जानती है। यहाँ पर यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि वो कौन है, जो हर किसी का एक दूसरे से अन्तर बनाए रखता है। उनका सिर्फ चेरा ही नहीं उनके फिंगर प्रिण्ट भी अलग-अलग प्रकार के होते हैं। यहाँ पर थोड़ी देर के लिए कल्पना की जाए कि चेहरे अलग-अलग प्रकार के न होकर सिर्फ दो प्रकार के हों, पहला मर्दों के लिए अलग और महिलाओं के लिए अलग। तो फिर क्या होगा और उनकी आवाजें भी अलग-अलग प्रकार की न होकर एक ही प्रकार की हों, तो कितनी बड़ी अव्यवस्था फैल जाएगी! निर्माण करने वाले को इसका पुर्वामान था। इसी से पता चलता है कि वो कितना बड़ा दूरदर्शी भी है। सिर्फ मनुष्य का चेहरा ही नहीं बल्कि जानवरों का चेहरा भी अलग-अलग प्रकार का होता है। तभी तो हजारों भेड़ों के झुण्ड में भी भीड़ का बच्चा अपनी माँ को ढूँढ लेता है और उसका ही दूध पीता है।

प्रकृति में भी हजारों प्रकार की वनस्पतियों की प्रजातियाँ होती हैं। पर हर वनस्पति के पत्ते, फूल और फल अलग-अलग प्रकार के होते हैं। सबके रूप, रस, गन्ध और स्वाद भी अलग-अलग प्रकार के होते हैं, क्या रहस्य है?

ईश्वर को जानने के लिए बहुत दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। हम निर्माणकर्त्ता की सबसे अनुपम कृति इस मानव शरीर को देखें तो पता चलेगा कि कितनी बुद्धिमत्तापूर्वक इसकी संरचना की गई है। विज्ञान का सिद्धांत है कि कर्त्ता के बिना किसी क्रिया का सम्पादन नहीं होता है और न ही निर्माण। निर्माण है तो कोई निर्माणकर्त्ता भी होगा, रचना है तो कोई रचनाकार भी होगा। ऐसा बिल्कुल सम्भव नहीं कि निर्माण हो, परंतु निर्माणकर्त्ता नहीं हो। तो आइए थोड़ा देखें कि इस मानव शरीर निर्माण में कितनी बुद्धिमत्तापूर्वक कौन-कौन सी चीजें प्रदान की गई हैं।

चमड़ी से ढका मानव शरीर बिना सूई-धागे के किस प्रकार से सिया गया है कि पता ही नहीं चलता। एक स्वस्थ मानव शरीर में 36 लीटर पानी रहता है। इसमें चीनी 1 किलो, अमोनिया 2 किलो, नमक 150 ग्राम, लोहा इतना कि अगर जमा किया जाए तो 2 इंच मोटी कील बन सकती है। गन्धक इतना कि दियासलाई की 100 तिलियाँ बनाई जा सकती हैं। चर्बी इतनी कि इससे साबुन की 7 टिकिया बनाई जा सकती हैं। 72 करोड़ 72 लाख 10 हजार 110 नस नाड़ियों का जाल शरीर के कोने-कोने में फैला हुआ है। आज तक आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी इसकी गिनती नहीं कर सका है।

सवाल है कि मानव शरीर में 36 लीटर पानी किसने और क्यों सुनिश्चित किया है? क्योंकि पानी की मात्रा अगर बढ़ जाए तो भी परेशानी और अगर कम हो जाए तो जान पर बन जाती है। इसलिए तुरन्त ही बाहर से पानी चढ़ाया जाता है। इसी प्रकार से अन्य चीजों का बहुत ही महत्त्वपूर्ण योगदान है।

आगे देखिए मानव शरीर में 1 मिनट में 16-17 श्वासें निरन्तर चल रही हैं। यह दिल 24 घंटे में 1 लाख 13 हजार बार धड़कता है। इस प्रकार यह पूरे जीवन काल में करोड़ों बार धड़कता होगा और फिर एक दिन ऐसा आता है जब दिल धड़कना बन्द हो जाता है और फिर जीवन लीला समाप्त हो जाती है, त खिर कौन है इसका नियंत्रणकर्त्ता।

एक वयस्क मानव शरीर में 5-6 लीटर रक्त होता है। महिलाओं में इसकी मात्रा 1/2 लीटर कम होती है। रक्त का कार्य ताप का नियंत्रण तथा शरीर की रोगों से रक्षा करना होता है। इस रक्त में निरन्तर संचार होता रहता है, जिसे ब्लड सरक्यूलेशन कहा जाता है। क्या रक्त संचार अपने आप होता है?

मानव शरीर में 206 हड्डियाँ होती हैं। सिर में 29 हड्डियाँ होती हैं, रीढ़ में 26 रहती हैं, कपाल में 8, चेहरे में 14 और कान में 6 हड्डियाँ होती हैं। ईश्वर की अवधारणा में विश्वास नहीं रखने वाले कृपया यह बताएँ कि शरीर में 206 हड्डियाँ क्यों प्रदान की गई हैं? अगर 206 के बदले में सिर्फ एक हड्डी हो तो क्या हो जाएगा। यही होगा कि न तो हम उठ सकते हैं तथा न ही मुड़ सकते हैं और न ही चल-फिर सकते हैं। मानव शरीर के दोनों हाथों में 5-5 अंगुलियाँ प्रदान की गई हैं। अगर ये अंगुलियाँ न हों तो दुनियाँ का सारा मेकेनिज्म और टेक्नोलॉजी धरी की धरी रह जाएगी।

इसका मतलब है कि शरीर निर्माण की हर बात में विज्ञान छिपा हुआ है।

अब हम मानव शरीर से बाहर आकर इस ब्रह्माण्ड को देखें। ब्रह्माण्ड में सभी ग्रह और नक्षत्र गतिशील हैं। हमारी पृथ्वी भी अपने अक्ष पर एक हजार मील प्रत्येक घण्टे की चाल से लट्टू की तरह घूमती है, जिस वजह से दिन और रात होते हैं। इसी प्रकार हमारी पृथ्वी सूर्य के चारों और भी 66 हजार मील प्रति घण्टे की रफ्तार से चक्कर लगाती है और 365 दिन 56 मिनट और 46 सेकण्ड में एक चक्कर लगाती है। यही कारण है कि 365 दिनों को एक साल माना जाता है। हमारा सूर्य भी अपने सभी ग्रहों और सौर मण्डल को साथ लेकर घूम रहा है। सूर्य प्रत्येक घण्टे में 40 हजार मील की रफ्तार से चलता है। कितना बड़ा आश्चर्य है कि सभी ग्रह और नक्षत्र नियमपूर्वक चलते रहते हैं, न कभी थकते हैं, न कभी रुकते हैं और न ही कभी आराम करते हैं। इतना ही नहीं ये अरबों-खरबों ग्रह और नक्षत्र गतिमान होते हुए भी आपस में नहीं टकराते हैं। कैसी है ये व्यवस्था। प्रश्न उठता है कि वो कौन है जो सूर्य और पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों और नक्षत्रों में गति का संचार करता है। प्रकाश भी 1 लाख 86000 मील प्रत्येक सेकण्ड की चाल से चलता है। इसी प्रकार आवाज की भी अपनी गति होती है। क्या प्रकाश और आवाज ने, जो निर्जीव हैं, अपनी गति स्वयं ही निर्धारित कर ली है।

इस प्रकार के हजारों प्रश्न हैं जिनका उत्तर ईश्वर की अवधारणा से इनकार करते हुए ढूँढना बहुत मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है। पहाड़ों और नदियों में जंगलों के झूमते वृक्षों में, समुद्र की उफनती लहरों में, झरने के कलकल करते जलप्रपात में, तारों भरे आकाश में, आग की धधकती ज्वाला में, इन अरबों-खरबों ब्रह्माण्डों में, इस अनन्त विश्व में, इस आकाश के भीतर दिखाई देने वाले इस अंतिम तारे में भी जिसके 1 लाख 86000 मील प्रत्येक सेकण्ड की चाल से चलते हुए प्रकाश को पृथ्वी तक पहुंचने में एक करोड़ वर्ष लगते हैं। इन सब आश्चर्यों में हम प्रभु की महिमा देखने को विवश हो जाते हैं।

सफलता उसको मिलती, कीमत जो दे पाय

हालत बदले हालात, हालत बदली जाय।
हालत सुधार कर सदा, हालात सुधर पाय॥
वजह खुशी की तू बने, खुश तब तू रह पाय।
हाथ मेहंदी रच रहा, वह खुद ही रच जाय॥
मेरा ईश्वर दे रहा, हर पल ही संदेश।
मैं मूरख मानूं नहीं, ईश्वर का आदेश॥
बैठ अकेला खा रहा, खाता है वो पाप।
मिलजुल कर लेना सदा, यज्ञ शेष ही आप॥
बिन सोचे जो भी करे, सफल नहीं हो पाय।
केवल सोचे ना करे, मंजिल कैसे पाय॥
जीते अपने आप को, जीत वही तो पाय।
अपने मन से हारता, जीत नहीं वह पाय॥
मुश्किल तो इक आइना, करवाता आभास।
कितनी ताकत सहन की, देती है यह भास॥
सफलता उसको मिलती, कीमत जो दे पाय।
किसको कभी क्या मिला, बिना मोल चुकाय॥
खुद पर यकीन वो, कर सके चमत्कार।
खुद पर नहीं यकीन तो, फसे बीच मझधार॥
कल से लेकर सीख तू, वर्तमान जी जाय।
चिंता फिर करना नहीं, कल खुद ही बन जाय॥

नरेन्द्र आहूजा 'विवेक
602, जी.एच.-53, सेक्टर-20
पंचकुला (हरियाणा)

पंजीयन संख्या : RAJHIN(RNI)2000/2567
डाक पं. सं. : Jaipur City/264/2018-20

वैदिक कन्या महाविद्यालय राजापार्क और स्कूल की छात्राओं ने पुलवामा के शहीदों को दी श्रद्धांजलि

जयपुर। वैदिक कन्या पी.जी. महाविद्यालय, राजापार्क, जयपुर एवं वैदिक बालिका स्कूल की छात्राओं ने पुलवामा में हुए आतंकी हमले के विरोध में रैली निकाली और शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि दी।

छात्राओं ने महाविद्यालय से लेकर भगतसिंह पार्क तक रैली निकाली। रैली में पाकिस्तान मुर्दाबाद, आतंकवाद मुर्दाबाद, भारत माँ के शहीद अमर रहे नारे लगाते रहे। संस्था के प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी एवं मंत्री डॉ. अनिरुद्ध साहनी ने शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। छात्राओं, स्टाफ एवं प्राचार्या डॉ. यशोदा सक्सेना ने शहीदों के लिए दो मिनट का मौन रखा। छात्राओं के जोश और उत्साह ने पूरे एरिया को देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत कर दिया।

संत रैदास जयंती पर विशेष

अधिकांश विद्वानों की राय है कि रैदास जी का जन्म सम्वत् 1456 के आसपास बनारस छावनी के निकट मडुआडीह में हुआ था। उनके पिता का नाम, बहुत से विद्वानों के अनुसार, रग्घू और माता का नाम धुरविनिया था। उनकी पत्नी का नाम लोना था। कुछ विद्वानों के अनुसार उन्हें विजयदास नामक एक पुत्र हुआ था। रैदास जी और उनकी पत्नी चर्मकारों की एक उपजाति चमकटैया में जन्मे थे। यह भी आमतौर से विश्वास किया जाता है कि रैदास जी कबीर से कुछ छोटे थे।

संत रैदास के विचार में सभी मानव निराकार के अंश हैं फिर वे बड़े-छोटे कैसे? इस संबंध में उनकी दो वाणियां नीचे दी जा रही हैं-

रैदास इकहि नूर सों, जिमि उपज्यो संसार।
ऊंच-नीच किस विध भये, ब्राह्मण, सूद चमार॥

ब्रह्मा की ज्योति से ही सारा संसार पैदा हुआ, फिर ब्राह्मण, शूद्र और चमार छोटे-बड़े कैसे बने?

मानव शरीर के संबंध में रैदास जी ने जो रूपक बाधा है वह बेजोड़ है, अनुपम है। वे कहते हैं-

जल की भीति पवन का थंभा रकत बून्द का गारा।
हाड़ मांस नाड़ी को पिजंरु, पंक्षी बसै विचारा॥
प्राणी किया, मेरा किया तेरा, जैसे तरवर पखि बसेरा।
राघव कन्ध उखारहु नींवा, साढ़े तीनि हाथ तेरी सींचा।
पके बाल पाग सिर डेरी। इहु तनु होइगो भसम की ढेरी॥
ऊंचै मन्दर, सुन्दर नारी। राम नाम बिनु बाजी हारी॥

आर्य समाज, आदर्श नगर, जयपुर के धर्माचार्य पं. जानकी प्रसाद शर्मा की सुपुत्री श्रुति शर्मा के विवाह समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं कार्यकारी प्रधान सत्यव्रत सामवेदी जी, मंत्री विट्ठल राव जी- हैदराबाद, डॉ. वागीश- मुम्बई, आचार्य भगवानदेव जी, डॉ. वेदप्रकाश जी, आचार्य मेघश्याम जी- दिल्ली, डॉ. रामप्रकाश जी सरल, आचार्य भूदेव जी, डॉ. सत्यकेतु जी- लखनऊ, आचार्य सुरेश शास्त्री, आचार्य मनुदेव जी सहित जयपुर शहर की सभी आर्य समाजों के पदाधिकारी व गणमान्य नागरिकों ने उपस्थित रहकर वर-वधु को आशीर्वाद प्रदान किया।

पं. जानकी प्रसाद , जयपुर को आर्य सिद्धांतों व मूल्यों के प्रचार प्रसार के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए गुरुकुल आश्रम आमसेना के 51वें वार्षिक महोत्सव पर चौ. मित्रसेन आर्य की पुण्य स्मृति में सम्मानित किया गया।

॥ ओ३म् ॥
वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र
आर्य नीति

सत्यव्रत सामवेदी,सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक 5च-13, जवाहर नगर, जयपुर के लिये हरिहर प्रिन्टर्स, आदर्श नगर, जयपुर से मुदित।

सम्पादक मण्डल
घनश्यामधर त्रिपाठी

फोन नं. : 0141-2621859 का. : 2624951
M :9829052697, e-mail: Vishwamaryam@gmail.com
9929804883 Vishwamaryam@rediffmail.com

आर्य समाज, विद्या समिति एवं शिक्षा समिति, आदर्श नगर, जयपुर के सौजन्य से प्रकाशित

प्रेषक : सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, आर्य नीति
आर्य समाज, राजापार्क, जयपुर - 4
राजस्थान

डाक टिकिट

पंजियन संख्या
RAJHIN(RNI)/2000/2567
डाक पंजीयन संख्या
Jaipur City/264/2018-20

प्रेषित : ....

-:: डाक वापसी का पता ::-
आर्य नीति, आर्य समाज, आदर्श नगर, जयपुर-4, राज.